005321

कक्षा-11

तिलकोर

भाग-1

तिलकोर

(भाग – 1)

एगारह कक्षाक मैथिली पाठ्यपुस्तक

(एस.सी.ई.आर.टी., बिहार, पटना द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त ।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

प्रथम संस्करण : 2007-10,000

मूल्य : रु० 22.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य–पुस्तक भवन, बुद्धमार्ग, पटना – 800 001 द्वारा प्रकाशित तथा उत्कर्ष ऑफसेट, पटेल नगर पटना–23 द्वारा एच. पी. सी. के 60 जी. एस. एम. क्रीम वोभ (वाटर मार्क) टेक्स्ट पेपर एवं ए.पी.पी.एम. के 175 जी. एस. एम. पल्प बोर्ड (वाटर मार्क) आवरण पेपर पर कुल 10,000 प्रतियाँ 20.5 × 14 सेमी आकार में मुद्रित ।

प्राक्कथन

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकारक निर्णयानुसार जुलाई2007सँ राज्यक उच्च माध्यमिक कक्षा (कक्षा : XI - XII) हेतु नव पाठ्यक्रमकँ लागू कयल गेल अछि । भाषा समूहक पोथी सभक नव पाठ्यक्रमक आलोकमे एस.सी.ई.आर. टी., पटना द्वारा विकसित तथा बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम द्वारा आवरण डिजाइनिंग कऽ मुद्रित कयल गेल अछि, कँ बिहार राज्यक पाठ्य-पुस्तकक रूपमे स्वीकार कयल गेल अछि। ई पोथी ओही अनुक्रमणिकाक एक शृंखला थिक।

बिहार राज्यमे विद्यालयीय शिक्षा (कक्षा : I-XII)क गुणवत्तापूर्ण सशक्तिकरणक निमित्त कृत संकल्पित एवं शिक्षाक समर्थ योजनाकार माननीय मुख्यमंत्री, श्री नीतीश कुमार, मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री वृषिण पटेल तथा मानव संसाधन विकास विभागक प्रधान सचिव, श्री अंजनी कुमार सिंहक मार्ग निर्देशनक प्रति हम कृतज्ञ छी ।

हमरा आशा अछि जे ई पोथी सभ राज्यक वर्त्तमान एवं भावी पीढ़ीक लेल ज्ञानोपयोगी सिद्ध होयत । एस.सी.ई.आर.टी.क निदेशकक हम आभारी छी, जनिक नेतृत्वमे एहि पुस्तककँ विकसित कयल गेल ।

हमरा आशा नहि पूर्ण विश्वास अछि जे प्रस्तुत पोथी, ज्ञानवर्धक, ज्ञानोपयोगी एवं उपलब्धि स्तरक वृद्धिमे सहायक सिद्ध होयत। यद्यपि संवर्द्धन एवं परिष्करणक सम्भावना सदैव भविष्यक कोरामे सुरक्षित रहैत अछि, तथापि प्रकाशन एवं मुद्रणमे निरन्तर अभिवृद्धि करबाक प्रति समर्पित बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्र, अभिभावक, शिक्षक, शिक्षाविद लोकनिक टिप्पणी एवं सुझावक सदैव स्वागत करत जाहिसँ बिहार राज्यकँ देशक शिक्षा जगतमे उच्चतम स्थान देअयबामे हमर प्रयास सहायक सिद्ध भऽ सकय ।

फ़ेराक़ अहमद, भा०प्र०से०
प्रबन्ध-निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन
निगम लि०

दिशा-बोध

श्री इन्दुमौलि त्रिपाठी, निदेशक, राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार ।

श्री रघुवंश कुमार, निदेशक (शैक्षणिक), बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक प्रभाग), पटना ।

मैथिली पाठ्यपुस्तक विकास समिति

अध्यक्ष

डॉ० इन्द्रकान्त झा, पूर्व अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।

समन्वयक

डॉ० अनिल कुमार मिश्र, व्याख्याता, राजकीय बालक उच्च विद्यालय, लालबहादुर शास्त्रीनगर, पटना–23 ।

सह-समन्वयक

डॉ० लक्ष्मीकान्त चौधरी 'सजल', व्याख्याता, पटना हाई स्कूल, गर्दनीबाग, पटना ।

सदस्य

डॉ० सूर्य कुमार झा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, एस.सी.ई.आर.टी., पटना।

डॉ० वीणाधर झा, व्याख्याता, पटना कॉलेजियट स्कूल, दरियापुर, पटना ।

डॉ० सुभाष चन्द्र झा, व्याख्याता, सीमैट, बिहार, पटना

श्रीमती रंजना झा, एस.सी.ई.आर.टी., पटना, बिहार ।

अकादमिक सहयोग

श्री राजेन्द्र मंडल, व्याख्याता, एस. सी. ई. आर. टी. पटना ।

श्री गंगानन्दन 'कलाधर', श्रीनगर, बेतिया, (पं० चम्पारण)

अकादमिक संयोजन, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विकास समिति

श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान, एस. सी. ई. आर. टी., महेन्द्रू, पटना ।

आमुख

प्रस्तुत पोथी राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा, 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्याक रूपरेखा, 2006क आलोकमे विकसित नवीन पाठ्यक्रम (2007)क आधार पर बनाओल गेल अछि । एहि पुस्तकक विकासमे एहि बातक ध्यान राखल गेल अछि जे शिक्षाक अर्थ बिहारक विद्यालयीय शिक्षार्थीकेँ एतबा सक्षम बना देब अछि जे ओ अपन जीवनक सम्यक् ओ यथार्थ अर्थ बुझि सकय, अपन समस्त योग्यताक समुचित विकास कऽ सकय, अपन जीवनक अभीष्ट निर्धारित कऽ सकय तथा ओकरा प्राप्त करबाक लेल यथासंभव सार्थक एवं प्रभावी प्रयास कऽ सकय, आओर संगहि संग एहि बातकेँ सेहो बुझि सकय जे समाजक दोसरा व्यक्तिकेँ सेहो एहने करबाक पूर्ण अधिकार प्राप्त छैक । राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा, 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्याक रूपरेखा, 2006 द्वारा निर्दिष्ट दृष्टिकोण हमरा एहि दिस उन्मुख करैत अछि जे शिक्षार्थीक विद्यालयीय परिधिक क्रियाकलाप एवं विद्यालयसँ बाहरक जीवनमे अंतराल नहि होयबाक चाही । पोथी ओ पोथीक बाहरक जगत आपसमे शृंखलाबद्ध होयबाक चाही । आशा अछि जे ई प्रयास राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)मे वर्णित शिक्षार्थी केन्द्रित व्यवस्थाक दिशामे बहुत दूर धरि लऽ जायत ।

एहि पोथीमे किशोर वयक कल्पनाशक्तिक विकास, हुनक गतिविधिक सृजनशीलता, हुनक प्रश्न करबा एवं ओकर उत्तर प्राप्त करबाक मौलिक अधिकारक समुचित संरक्षण तथा ओकरा रचनात्मक दिशा देबाक प्रयास कयल गेल अछि । निश्चये एहिमे शिक्षार्थीक संग-संग शिक्षक लोकनिक सेहो गंभीर अंतरंगताक संगहि ओतबे भूमिका होयबाक चाही । शिक्षार्थीक प्रति संवेदना एवं सहानुभूतिक संग हुनका पोथीमे सक्रिय सहभागिता राखय पड़तनि तथा लेखक परिचय, मूल पाठ आओर ओकरा संग संलग्न अभ्यास प्रश्नक सन्दर्भमे समुचित जागरूकता देखाबय पड़तनि । प्रत्येक पाठक संग अनेक तरहक अभ्यास अछि जाहिसँ शिक्षार्थीक अधिकार पाठ पर तँ बनबे करत, संगहि ओकर अभ्यन्तर व्यापक जिज्ञासाकेँ प्रोत्साहन भेटत । पुस्तकक परिकल्पनामे अनेक महत्त्वपूर्ण बात सभकेँ ध्यान राखल गेल अछि । भाषा

ओ साहित्यक परिधिमे बान्हल घेराकेँ सकारात्मक स्तर पर विशृंखल करबा तथा वृहत्तर अनुभव क्षेत्र सभकेँ ओहिसँ जोड़बाक संग–संग वैविध्यपूर्ण पाठ शृंखलाकेँ उबाऊ होयबासँ बचबैत एहन प्रयत्न कयल गेल अछि जे पाठ बोझिल नहि होअय तथा सामयिक जीवन संदर्भसँ सम्पृक्त भऽ छात्रक लेल रोचक बनि जाय । छात्र उत्सुकता एवं आनंदक संग तनावमुक्त रीतिसँ ओकरा पढ़ैत बहुविध जानकारी प्राप्त करय तथा ओहि जानकारीक ज्ञानक सृजनमे उपयोग कऽ सकय ।

एस.सी.ई.आर.टी. सर्वप्रथम मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकारक माननीय मंत्री वृषिण पटेल एवं प्रधान सचिव डा० मदन मोहन झाक प्रति विशेष आभार प्रकट करैत अछि जनिका नियमित मार्गदर्शनक बिना बिहारक नवीन पाठ्यक्रम (2007) एवं एहि पाठ्यपुस्तकक रचना संभव नहि होइत । एहि पुस्तकमे सम्मिलित रचनाकार, हुनक प्रकाशक एवं समस्त परिवारक प्रति आभार प्रकट करैत एहि पुस्तकक विकासक लेल बनाओल पाठ्यपुस्तक विकास समितिक प्रति सेहो एस.सी.ई.आर.टी. कृतज्ञता व्यक्त करैत अछि । मैथिली भाषा समूहक अध्यक्ष डॉ० इन्द्रकान्त झा, समन्वयक, डॉ० अनिल कुमार मिश्र, सह-समन्वयक डॉ. लक्ष्मीकान्त चौधरी 'सजल', सदस्य डॉ. वीणाधर झा, श्री सुभाष चन्द्र झा, श्रीमती रंजना झाक प्रति हम विशेष आभार प्रकट करैत छी । ई लोकनि गंभीर सूझ-बूझ, अथक परिश्रम एवं भावात्मक लगावक संग एहि कार्यकेँ ससमय सम्पन्न कयल । पाठ्य पुस्तक विकास समितिक अकादमिक संयोजक श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठीक प्रति सेहो हम कृतज्ञता व्यक्त करैत छी। श्री त्रिपाठीक एकनिष्ठ सक्रियताक परिणाम अछि जे ई पोथी अपने लोकनिकेँ हस्तगत भऽ सकल ।

पुस्तक अपनेक हाथमे अछि । एकर अध्ययन-अध्यापनक प्रसंगमे भेल अनुभवसँ उत्पन्न परामर्श एवं सुझावक हमरा सदैव प्रतीक्षा रहत ।

(इन्दुमौलि त्रिपाठी)
निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
बिहार, पटना ।

प्रस्तुत पोथी : एक सिंहावलोकन

उच्च माध्यमिक स्तरक शिक्षाकेँ प्रश्रय देबाक दृष्टिकोण राष्ट्रीय शिक्षा नीति, (1986 ई०) द्वारा प्रेरित रहल अछि तथा ओकर अनुशंसाक अनुकूले बिहारक विभिन्न महाविद्यालय ओ उच्च माध्यमिक विद्यालय सभमे जोड़ दू शिक्षाकेँ प्रस्तावित कयल गेल छल । एक पैघ अन्तरालक पश्चात् एकर वर्त्तमान स्वरूप ओ पाठ्यक्रममे परिवर्त्तन करबाक आवश्यकता महसूस कयल जाय लागल । एकर एक प्रमुख कारण राज्य ओ राष्ट्रीय स्तरक पाठ्यक्रममे समानता नहि होयब छल । परिणामस्वरूप राष्ट्रीय पाठ्यक्रमसँ सम्बद्ध तकनीकी ओ अन्य प्रतियोगिता परीक्षा सभमे बिहारक शिक्षार्थी लोकनिकेँ अपेक्षित सफलता नहि भेटैत छलनि । यैह कारण थिक जे वर्त्तमान पाठ्यक्रममे आमूलचूल परिवर्त्तन करबाक निर्णय लेल गेल । एहि क्रममे राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (N.C.E.R.T.)क द्वारा विभिन्न विषयक लेल निर्मित पाठ्यक्रमकेँ स्वीकार कऽ लगभग ओही पाठ्यक्रमकेँ (भाषा समूहकेँ छोड़ि) सत्र 2007-09सँ बिहारमे लागू कऽ देल गेल । ई प्रयास एक दिस विभिन्न विषयक पाठ्यक्रमकेँ राष्ट्रीय शैक्षणिक धारासँ जोड़ि देलक अछि तँ दोसर दिस बिहारक छात्र लोकनिकेँ सफलताक अतिरिक्त अवसर सेहो प्रदान कयलक अछि ।

विभिन्न विषयक हेतु N.C.E.R.T. द्वारा बनाओल पाठ्यक्रमकेँ यथावत् जकाँ स्वीकार करितहुँ बिहारमे प्रचलित विभिन्न भाषा सभकेँ एक विरासतक रूपमे स्वीकार कऽ ओकर संरक्षण एवं संवर्द्धनक प्रति समभाव रखैत 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा' (2005)मे वर्णित भाषा विषयक विशद् विवरण ओ तदंतर ओकरहि आलोकमे विकसित 'बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2006) द्वारा निर्धारित मानदण्डक आलोकमे ओकर नवीन पाठ्यक्रम ओ पाठ्यपुस्तक निर्मित्त कऽ प्रकाशित करयबाक निर्णय लेल गेल । एहि कार्यक सम्पादन हेतु S.C.E.R.T., बिहारकेँ अधिकृत कयल गेल । एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा बनाओल गेल विद्वत वर्गक गहन-चिन्तन, मनन-मंथनक परिणाम थिक– 'तिलकोर' (भाग-1)।

मैथिली एक उन्नत भाषा थिक एवं चौदहम शताब्दीसँ एकर क्रमबद्ध एवं समृद्ध साहित्यिक परम्परा रहल अछि। साहित्यिक समृद्धिएक परिणाम थिक जे अन्य भाषा-भाषी मैथिलीक साहित्यकारकेँ अपन साहित्य मध्य महिमामंडित करबाक लोभक संवरण नहि कऽ पबैत छथि। चौदहम शताब्दीमे रचित वर्णरत्नाकर सदृश भारतीय भाषाक प्राचीनतम परिमार्जित गद्य ग्रंथ ओ विद्यापति, गोविन्ददास, उमापति, हर्षनाथ झा, सदृश प्रतिभाशाली साहित्यकार लोकनिक मध्यकालक अन्त धरि अनवरत साहित्य-साधना एवं चन्दा झा, जीवन झा, मुंशी रघुनन्दन दास, प्रो० रमानाथ झा, हरिमोहन झा, यात्री प्रभृति आधुनिक दृष्टिकोणसँ युक्त साहित्यक विशालकाय भंडार देखि ककरो ईर्ष्या भऽ जायब नैसर्गिक थिक।

'तिलकोर' नामक पात, पान, मखान, माछ जकाँ मैथिल संस्कृतिक एक अभिन्न अंग रहल अछि। कोनहु विशिष्ट अवसर पर ग्रामीण परिवेशमे एहि प्राकृतिक पातक उपयोग खाद्य-पदार्थक रूपमे कयल जाइछ। वस्तुतः ई नाम मिथिलाक अनेक सांस्कृतिक वैशिष्ट्यक प्रतीकमे सँ एक अछि। 'पाठ्य पदार्थ'क रूपमे जे 'तिलकोर' (भाग-1) किशोर वयक शिक्षार्थी लोकनिक समक्ष परसल जा रहल अछि ओहिमे दूटा खंड अछि। गद्य खंडक बारहटा पाठमे गवेषित निबन्ध, उच्च नैतिक मूल्यक संदेशसँ युक्त कथा, जीवनी, एकांकी, यात्रा-वृत्तांत आदि विविध रंग भरबाक प्रयास कयल गेल अछि। 12 गोट पद्य खंडमे सेहो सभ तरहक विविधता अछि। एहिमे ज्ञानवर्द्धन, साहित्यक सौन्दर्य बोध ओ मनोरंजनक अद्भुत समन्वय भेटत। दुनू खंडमे नओ गोट साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त साहित्यकारक रचना संकलित अछि। समसामयिक प्रवृतिक विषयवस्तुक चयन, विभिन्न विधाक समावेश, नैतिक ओ मानवीय मूल्यकेँ प्राथमिकता दैत सन्तुलित ओ व्यापक दृष्टिकोण अपनाओल गेल अछि। कतहु पाठ्यवस्तु बोझिल नहि होअय तथा सहज अधिगम ओ स्वाभाविक अभिव्यक्ति अथवा संप्रेषणक क्षमता विकसित करबाक अभीष्ट रहल अछि। पाठक अन्तमे शब्दार्थ, प्रश्न ओ अभ्यास, शिक्षार्थीक सृजनशीलताक विकासक लेल 'गतिविधि' ओ शिक्षक हेतु अपेक्षित निर्देश सेहो देल गेल अछि। व्याकरण ओ अन्य व्यावहारिक ज्ञान विकसित करबाक संदेशसँ युक्त प्रश्न सेहो देल गेल अछि।

एहि पोथीमे संकलित पाठ सभक वर्तनीकेँ एकरूप रखबाक यथासंभव प्रयास कयल गेल अछि। पाठ्य पुस्तक विकास हेतु अधिकृत विद्वान लोकनिक बहुमत द्वारा वर्तनीक प्रसंग निर्णीत दिशाक आलोकमे कतोक रचनामे समरूपता आनबाक उद्देश्येँ ओकरा मूलसँ भिन्न वर्तनीमे रूपान्तरित करय पड़ल। एहि क्रममे यथासंभव प्रयास कयल गेल अछि जे कोनहु पाठक मूल सौन्दर्य मलिन नहि होअय तथापि एतबा परिश्रमक बादहु परिवर्तित वर्तनीमे जँ कोनहु रचनाक स्वाभाविकता अथवा मौलिकता प्रभावित भेल हो से हमर अभीष्ट नहि छल। हमरा लोकनिक प्रयास पूर्वाग्रहरहित अछि तथा किनको आहत करबाक उद्देश्य नहि। एकर अतिरिक्त एखन एकरा शीघ्र प्रकाशित करयबाक बाध्यता सेहो भऽ गेल अछि तथापि संभव अछि जे एतबा परिश्रमक बादहु एहिमे त्रुटि रहि गेल होअय। अपने लोकनिसँ मार्गदर्शन अपेक्षित अछि। जँ आवश्यक ओ संभव बुझना जायत तँ ओकर निवारण अग्रिम संस्करणमे कयल जायत, हम एतबा विश्वास दऽ सकैत छी।

आशा करैत छी जे प्रस्तुत संकलन शिक्षार्थी लोकनिक लेल उपादेय होयत।

समन्वयक, मैथिली भाषा समूह
डॉ० अनिल कुमार मिश्र, व्याख्याता
राजकीय बालक उच्च विद्यालय
लालबहादुर शास्त्रीनगर, पटना।

अध्यक्ष, मैथिली भाषा समूह
डॉ० इन्द्रकान्त झा, पूर्व अध्यक्ष
मैथिली विभाग
पटना विश्वविद्यालय, पटना।

विषयानुक्रम

गद्य-खंड

1.	डॉ. अमरनाथ झा	: मैथिली साहित्य	1 - 6
2.	प्रो. रमानाथ झा	: समीक्षा-वृत्ति	7 - 16
3.	प्रो. हरिमोहन झा	: ग्रामसेविका	17 - 26
4.	डॉ. सुभद्र झा	: जर्मनी यात्रा	27 - 32
5.	उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'	: शैदा आओर हमीदा	33 - 41
6.	डॉ. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'	: नैका बनिजारा	42 - 51
7.	सुधांशु 'शेखर' चौधरी	: हथटुट्टा कुरसी	52 - 59
8.	डॉ० अणिमा सिंह	: मैथिली लोकगीत : किछु वैशिष्ट्य	60 - 65
9.	डॉ० अमरेश पाठक	: मिथिलाक सांस्कृतिक परम्परा	66 - 71
10.	डॉ० रामदेव झा	: भारत : राष्ट्र ओ राष्ट्रधर्म	72 - 78
11.	डॉ० फुलेश्वर मिश्र	: लक्ष्मीनाथ गोसाईं	79 - 87
12.	सुभाष चन्द्र यादव	: घरदेखिया	88 - 96

पद्य-खंड

1.	विद्यापति	: (ख) वय:सन्धि	97 - 99
		(क) हर-हरि	100 - 101
2.	उमापति	: धनिक विशेष	102 - 104
3.	चन्दा झा	: मिथिला वर्णन	105 - 107
4.	सीताराम झा	: सूक्ति सुधा	108 - 111
5.	तन्त्रनाथ झा	: मुसरी झा	112 - 120
6.	सुरेन्द्र झा 'सुमन'	: हलधर	121 - 124
7.	वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'	: वन्दना	125 - 130
8.	चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'	: वृक्ष-महिमा	131 - 133
9.	फजलुर रहमान हासमी	: हे भाइ	134 - 136
10.	बिलट पासवान 'विहंगम'	: आषाढ़ गीत	137 - 139
11.	रामलोचन ठाकुर	: धनकटनी गीत	140 - 142
12.		बारहमासा	143 - 144

परिशिष्ट : मैथिली भाषा : वर्ग XI ओ XIIक पाठ्यक्रम [i -xiv]